कशीदाकारी - परिचय

Duration : 02.50 Transcribed words : 532

- संगीत -

00.10 ज्योति परनामी : मेरा नाम ज्योति परनामी है और मैं बहुत सालों से डिजाईनिंग का काम कर रही हूँ...

00.13 प्रीति पुगलिया : मेरा नाम प्रीति है और मैंने फैशन डिजाईन किया था... और अभी मैं काफी क्राफ्टस के साथ फैब्रिक्स में डिजाईनिंग कर रहे हैं... हम जिसमें हम, स्टार्ट तो हमने ट्रैडिशनल गारमेंट्स, एम्ब्राईडरीज और इन सबसे किया था पर अब धीरे धीरे हम बाहर की ट्रैंड को भी समझ रहे हैं... हमारे देश के बाहर के ट्रैंड क्या हैं...

00.37 ज्योति परनामी : सबसे पहले हम लोग एक ग्रे फैबरिक खरीदते हैं.... उसके बाद हम उसको प्रोसेस करते हैं डाईंग के लिये... डाईंग के बाद में पहले उसमें पैटर्न मेकिंग करते हैं... फिर हम उसको, अगर हाथ का काम है तो उसके लिए अड्डे पर लगाते हैं... सब काम हो जाने के बाद फिर उसकी कटिंग और स्टिचिंग के प्रोसेस में जाता है...

00.56 प्रीति पुगलिया : जो ये हम एम्ब्राईडरी कर रहे हैं इसकी काफी कठिनाईयाँ हैं जो लोग बना रहे हैं, उनके साथ भी है... जिनको हम बेचना चाह रहे हैं, उनके साथ भी है... तो हर दिन इतना कुछ बदलता है कि उन सबके साथ कदम बढ़ा के चलते रहना वो सब, सब चीजों को बहुत डिटेल में देखना पड़ता है...

01.17 ज्योति परनामी : अब जो नई जनरेशन है उनके लिये हमें बहुत सारा एक्सपेरिमेंट करना पड़ता है... कुछ नये नये डिजाईन्स क्रियेट करने पड़ते हैं... कारीगर लोगों को जैसा काम हम सिखाना चाहते हैं या करवाना चाहते हैं, काफी अंडरस्टैंडिंग हैं वो लोग... वो कर पाते हैं...

01.33 जय नारायण : काफी दिनों से कर रहा हूँ काम मैं... करीब पन्द्रह साल हो गये हैं मुझे करते...

01.38 फैसल खान : जिसे कारी बोलते हैं, और जरदोजी बोलते हैं, इसमें फतीला यूज होता है... इसमें ये सूई यूज होती है... और इसमें ये वर्क होता है... काफी सामान इसमें लगता है...

01.48 नारायण बैरवा : मैं ये साड़ी का जरदोजी का काम कर रहा हूँ सर जी... इसमें सर, गोटा पट्टी, रेशम वगैरह, सितारा वितारा सब काम में आता है सर जी...

01.57 मुकेश कुमार सैनी : मैं गोटा पट्टी भी करता हूँ, रेशम का, रेशम करते हैं... रेशम से पत्तियाँ बनाते हैं... और जरदोजी भी कर लेते हैं... और आरी, गोटा पत्ती, सब कुछ, जो भी है, वो सब कुछ करता हूँ मैं...

02.10 ज्योति परनामी : ऐसा देखें कि एक्सपेरीमेंट करते करते बहुत नई नई चीजें निकलती हैं इसमें से... और अच्छा भी फील होता है... थोड़ा इंडो वैस्टर्न लुक आ जाता है... कुछ ट्रेडिशनल स्टाईल का भी रह जाता है... सब, आज के जमाने में देखेंगे तो सब तरीके का काम चल रहा है... और अच्छा लगता है उनको सब, सब लोगों पे देखते हुये...

02.27 प्रीति पुगलिया : अगर मैं अपने डिजाईन को समझूँ और इसको देखूँ तो मुझे ऐसा लगता है कि जब मैंने पहले दिन से ही ये समझा कि वही डिजाईन किया जाये जो रोज में पहना जाये... तो मुझे लगता है कि मैं काफी लम्बे समय तक उसको इसलिये ले जा सकती हूँ क्योंकि मैं रोज को देख रही हूँ... और हर दिन को एक नये डिजाईन की तरह देख रही हूँ...